रणजीत टाइम्स

इंदौर

गुरुवार, 23 अप्रैल, 2026

वर्ष 02 | अंक 102 कुल पृष्ठ : 8 | Digital

RNI-NO.MPHIN/2015/64585

प्रधान संपादक : गोपाल गावंडे

केदारनाथ धाम में ऐतिहासिक बदलाव

अब गर्भगृह के बाहर से ही होंगे दर्शन, भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा के लिए सख्त नियम लागू

केदारनाथ धाम में हर साल देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। विशेषकर यात्रा सीजन के दौरान यहां भीड़ इतनी अधिक हो जाती है कि गर्भगृह तक पहुंचने के लिए श्रद्धालुओं को घंटों लंबी कतारों में खड़ा रहना पड़ता है। कई बार धक्का-मुक्की और अव्यवस्थित भीड़ के कारण दुर्घटनाओं की आशंका भी बनी रहती है। बीते वर्षों में कई बार ऐसी स्थितियां सामने आईं, जब भीड़ के दबाव को नियंत्रित करना प्रशासन के लिए चुनौती बन गया। इन्हीं अनुभवों से सीख लेते हुए इस बार मंदिर समिति ने पहले से ही रणनीति बनाकर नई व्यवस्था लागू की है।

नई व्यवस्था के तहत अब श्रद्धालु सभा मंडप में प्रवेश कर वहीं से भगवान केदारनाथ के दर्शन करेंगे और फिर व्यवस्थित तरीके से बाहर निकलेंगे। इससे गर्भगृह के भीतर भीड़ का दबाव पूरी तरह समाप्त हो जाएगा और दर्शन प्रक्रिया अधिक सुचारू रूप से संचालित की जा सकेगी। यह बदलाव उन श्रद्धालुओं के लिए भी राहत लेकर आया है, जो लंबी कतारों और भीड़भाड़ के कारण दर्शन से वंचित रह जाते थे या अत्यधिक परेशानी का सामना करते थे। बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने इस नई व्यवस्था को लेकर विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि मंदिर समिति का मुख्य उद्देश्य श्रद्धालुओं को सुरक्षित, सरल और सम्मानजनक दर्शन अनुभव प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि यह कदम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के दिशा-निर्देशों के अनुरूप उठाया गया है, जिसमें तीर्थस्थलों के आधुनिकीकरण और बेहतर प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इस नई व्यवस्था के साथ ही मंदिर परिसर में कई अन्य सख्त नियम भी लागू किए गए हैं। सबसे प्रमुख निर्णय यह है कि मंदिर से 70 मीटर के दायरे में मोबाइल फोन का उपयोग पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। इसके साथ ही फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी और सोशल मीडिया के लिए रील बनाने पर भी पूर्ण रोक लगा दी गई है। प्रशासन का मानना है कि इन गतिविधियों के कारण अक्सर भीड़ का प्रवाह बाधित होता है और धार्मिक वातावरण भी प्रभावित होता है। ऐसे में इन प्रतिबंधों से न केवल अनुशासन बनाए रखने में मदद मिलेगी, बल्कि श्रद्धालुओं को भी शांतिपूर्ण माहौल में दर्शन करने का अवसर मिलेगा। श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मंदिर परिसर में आधुनिक लॉकर सुविधाएं भी विकसित की गई हैं।

देश की 10 "सेफ सिटीज" में मध्यप्रदेश से एकमात्र धार का चयन, 10 करोड़ की मंजूरी: श्रीमती सावित्री ठाकुर के प्रयास लाए रंग

दिलीप पाटीदार

धार धार–महू संसदीय क्षेत्र की लोकप्रिय सांसद एवं केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर निरंतर क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही हैं। उनके सक्रिय नेतृत्व और दूरदर्शी प्रयासों के परिणामस्वरूप आज लोकसभा क्षेत्र में विकास की नई इबारत लिखी जा रही है। आधारभूत संरचना से लेकर सामाजिक सुरक्षा तक, हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिल रही है। इसी क्रम में धार जिले को एक बड़ी और ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त हुई है। मंत्री के विशेष प्रयासों से केंद्र सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा "निर्भया फंड" के अंतर्गत धार को 10 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। यह केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण की दिशा में एक मजबूत संकल्प का प्रतीक है।

गौरतलब है कि वर्ष 2026 के लिए देशभर के 10 प्रमुख शहरों को " सेफ सिटीज " परियोजना के अंतर्गत चयनित किया गया है, जिनमें मध्यप्रदेश से एकमात्र ऐतिहासिक नगरी धार को स्थान मिला है। यह चयन धार जिले के लिए गर्व और सम्मान का विषय है, जो क्षेत्र के विकास और सुरक्षा के प्रति केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस परियोजना के तहत धार एवं लोकसभा क्षेत्र के चयनित स्थानों पर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्तर पर कार्य योजना तैयार की जाएगी। आधुनिक तकनीकों जैसे सीसीटीवी निगरानी, स्मार्ट लाइटिंग, महिला हेल्प डेस्क, त्वरित पुलिस सहायता व्यवस्था तथा सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन जैसी सुविधाओं को सुदृढ़ किया जाएगा। इसके साथ ही जागरूकता अभियानों के माध्यम से समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा की भावना को भी बढ़ावा दिया जाएगा। केंद्र सरकार द्वारा शत-प्रतिशत वित्त पोषित यह महत्वाकांक्षी परियोजना महिलाओं को भयमुक्त वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इससे न केवल महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि उनके आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता में भी वृद्धि होगी। इस उपलब्धि से पूरे लोकसभा क्षेत्र की जनता में हर्ष और उत्साह का वातावरण है। इस अवसर पर मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि "सेफ सिटी" परियोजना के माध्यम से धार जिले को एक सुरक्षित, सशक्त और आदर्श शहर के रूप में विकसित किया जाएगा।

केजरीवाल पर कोर्ट की अवमानना का आरोप, जस्टिस तेजस करिया ने खुद को सुनवाई से किया अलग

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में एक बार फिर राजनीति और न्यायपालिका के बीच टकराव की स्थिति बनती नजर आ रही है। दिल्ली उच्च न्यायालय में दायर एक जनहित याचिका में आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल और पार्टी के अन्य नेताओं पर अदालत की अवमानना (कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट) का आरोप लगाया गया है। यह मामला अदालत की कार्यवाही से जुड़े एक वीडियो को सोशल मीडिया पर साझा किए जाने से संबंधित है। याचिका में आरोप लगाया गया है कि न्यायालय की कार्यवाही का वीडियो सार्वजनिक मंच पर साझा करना न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि यह न्यायिक प्रक्रिया की गरिमा को भी ठेस पहुंचाता है। इसी आधार पर केजरीवाल और अन्य संबंधित नेताओं के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की मांग की गई है। याचिकाकर्ता का कहना है कि अदालत की कार्यवाही को बिना अनुमति सार्वजनिक करना न्यायपालिका के स्थापित नियमों के खिलाफ है और इससे न्यायिक व्यवस्था की निष्पक्षता पर असर पड़ सकता है।

इस मामले की सुनवाई के दौरान एक अहम घटनाक्रम सामने आया, जब जस्टिस तेजस करिया ने खुद को इस केस की सुनवाई से अलग कर लिया। हालांकि, उन्होंने इसके पीछे कोई विस्तृत कारण सार्वजनिक रूप से नहीं बताया, लेकिन न्यायिक परंपरा के अनुसार, जब किसी जज को लगता है कि किसी भी कारण से वे निष्पक्ष सुनवाई सुनिश्चित नहीं कर पाएंगे या किसी प्रकार का हितों का टकराव हो सकता है, तो वे खुद को मामले से अलग कर लेते हैं।

जस्टिस करिया के इस फैसले के बाद अब यह मामला किसी अन्य पीठ को सौंपा जाएगा, जो आगे की सुनवाई करेगी। यह प्रक्रिया न्यायपालिका में सामान्य मानी जाती है और इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि हर मामले की सुनवाई पूरी निष्पक्षता और पारदर्शिता के साथ हो। इस पूरे घटनाक्रम ने राजनीतिक और कानूनी हलकों में हलचल पैदा कर दी है। आम आदमी पार्टी की ओर से अभी तक इस मामले पर विस्तृत प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है, लेकिन यह मुद्दा आने वाले दिनों में राजनीतिक बहस का विषय बन सकता है। विपक्षी दल इस मामले को लेकर सरकार और पार्टी नेतृत्व पर सवाल उठा सकते हैं, वहीं आप इसे कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा बताते हुए अपना पक्ष रख सकती है। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि अदालत की कार्यवाही को सार्वजनिक करना एक संवेदनशील विषय है।

शिवपुरीः भगवा झंडे को लेकर उपजा विवाद शांत, प्रांशुल अग्रवाल ने प्रशासन की कार्रवाई पर जताया संतोष

ऋषि गोस्वामी

शिवपुरी। शहर के हृदय स्थल माधव चौक पर पिछले कुछ दिनों से भगवा झंडे को हटाए जाने को लेकर चल रहा गतिरोध अब शांत होता नजर आ रहा है। इस पूरे घटनाक्रम और हिंदू समाज के आक्रोश के बाद, स्थानीय युवा और सामाजिक कार्यकर्ता प्रांशुल अग्रवाल ने मीडिया से रूबरू होकर अपना पक्ष रखा।

शांति भंग करने की कोशिश बर्दाश्त नहीं: प्रांशुल अग्रवाल मीडिया से चर्चा के दौरान प्रांशुल अग्रवाल ने कहा कि शिवपुरी हमेशा से एक शांतिप्रिय शहर रहा है जहाँ सभी समाज और धर्म के लोग मिल-जुलकर रहते आए हैं। उन्होंने झंडा हटाए जाने की घटना को 'विकृत मानसिकता' वाले लोगों की करतूत बताया जो शहर का सौहार्द बिगाड़ना चाहते हैं।

नगर पालिका की भूमिका पर उठाए सवाल- प्रांशुल ने बताया कि परशुराम जयंती के अवसर पर लगाए गए भगवा ध्वज को हटाए जाने के बाद हिंदू समाज के युवाओं में गहरा रोष था। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले दो-तीन दिनों से वे और उनके साथी प्रशासन के चक्कर काट रहे थे, लेकिन उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिल रहा था। प्रशासनिक आश्वासन और कार्रवाई प्रांशुल अग्रवाल ने जानकारी दी कि आज नगर पालिका अध्यक्ष और अन्य अधिकारियों से सकारात्मक चर्चा हुई। उन्होंने कहा: "आज पूरे हिंदू समाज की एकता का ही परिणाम है कि हमारे धर्म की शान, हमारा भगवा ध्वज पुनः उसी स्थान पर पूरे मान-सम्मान के साथ स्थापित कर दिया गया है। नगर पालिका अध्यक्ष ने हमें आश्वासन दिया है कि किस अधिकारी के आदेश पर झंडा हटाया गया था, इसकी गहन जांच की जाएगी और दोषियों पर सख्त कार्रवाई होगी।" समाज से शांति की अपील अंत में उन्होंने सभी से शांति बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि वे अपने धर्म और संस्कृति के सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। झंडा पुनः लगने पर उन्होंने समस्त हिंदू समाज का आभार व्यक्त किया और इसे अपनी आस्था की जीत बताया।

तुकईथडः समर्थन मूल्य खरीदी केंद्र पर किसानों का बुरा हाल, 'अन्नदाता' परेशान, जिम्मेदारों की मनमानी जारी

महेन्द्र मालवीय रणजीत टाईम्स

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश में सरकार द्वारा समर्थन मूल्य पर चना खरीदी का दावा किया जा रहा है, लेकिन धरातल पर स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है। बुरहानपुर जिले के ग्राम तुकईथड़ स्थित खरीदी केंद्र पर अव्यवस्थाओं का आलम यह है कि किसान अपनी उपज बेचने के लिए तीन-तीन दिनों से खुले आसमान के नीचे ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर रात बिताने को मजबूर हैं।

अनाज के कट्टों के नाम पर हो रही है खुलेआम लूट-किसानों ने गंभीर आरोप लगाते हुए बताया कि खरीदी केंद्र पर भारी भ्रष्टाचार हो रहा है। नियमानुसार 'वरदान' (जूट के कट्टे) का वजन 450 ग्राम निर्धारित है, लेकिन किसानों से प्रत्येक 50 किलो के कट्टे पर 800 से 850 ग्राम वजन काटा जा रहा है। यानी प्रति कट्टा 400 ग्राम अतिरिक्त उपज किसानों से अवैध रूप से वसूली जा रही है, जिससे उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

जिम्मेदार अपनी मर्जी के मालिक, किसान बेहाल-तुकईथड़ खरीदी केंद्र पर अव्यवस्थाओं की लंबी फेहरिस्त है:

मनमानी खरीदी: केंद्र पर खरीदी सुचारू रूप से नहीं हो रही है। जिम्मेदार अधिकारी अपनी मर्जी के मालिक बने हुए हैं, जब इच्छा होती है खरीदी शुरू करते हैं और जब मन करता है बंद कर देते हैं। धीमी गति: दिनभर में मात्र 10 से 12 ट्रैक्टर ही खाली हो पा रहे हैं, जिससे किसानों की लंबी कतारें लगी हुई हैं।

तोल कांटों की कमी: भारी भीड़ के बावजूद केवल एक ही तोल कांटा चालू है, जबकि यहां कम से कम 2 से 3 कांटों की तत्काल आवश्यकता है।

हम्मालों का अभाव: पर्याप्त संख्या में हम्माल नहीं होने के कारण भी काम की रफ्तार कछुआ गति से चल रही है।

सुविधाओं का घोर अभाव-एक तरफ अपने घरों में ए.सी. और कूलर की ठंडी हवा में बैठे अधिकारी , तो दूसरी तरफ खुले आसमान के नीचे मच्छरों के बीच रात गुजारते किसान। केंद्र पर पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं का भी घोर अभाव है। किसानों का कहना है कि उन्हें बिना किसी पूर्व सूचना के खरीदी बंद कर दी जाती है, जिससे उन्हें मायूस होकर वापस लौटना पड़ता है या फिर वहीं रुकना पड़ता है।

तत्काल सुध लेने की मांग- तुकईथड़ के किसानों ने जनप्रतिनिधियों और जिला प्रशासन से गुहार लगाई है कि वे तत्काल इस खरीदी केंद्र का निरीक्षण करें। किसानों ने मांग की है कि अतिरिक्त तोल कांटों की व्यवस्था हो, अवैध कटौती बंद की जाए और खरीदी की गति बढ़ाई जाए ताकि उन्हें इस भीषण गर्मी और अव्यवस्थाओं से मुक्ति मिल सके।

जिले के 06 प्रमुख डाकघरों में 25 अप्रैल को लगेंगे विशेष आधार कैंप; टोकन वितरण प्रारंभ

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

दिलीप पाटीदार

धार, डाक विभाग द्वारा आम नागरिकों की सुविधा के लिए जिले के विभिन्न केंद्रों पर आगामी 25 अप्रैल को विशेष आधार कैंपों का आयोजन किया जा रहा है। उप सम्भागीय निरीक्षक, डाक विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार, इन कैंपों का मुख्य उद्देश्य आधार नामांकन और अपडेशन की प्रक्रिया को नागरिकों के लिए और अधिक सुगम बनाना है।

समय और स्थान-यह विशेष कैंप जिले के निम्नलिखित डाकघरों में प्रातः 08:00 बजे से सायं 06:00 बजे तक आयोजित किए जाएंगे: प्रधान डाकघर धार, उपडाकघर पीथमपुर सेक्टर-01, उप डाकघर पीथमपुर सेक्टर-03, उप डाकघर सरदारपुर, उप डाकघर राजगढ़ तथा उपडाकघर धामनोद में आयोजित किए जाएंगे।

कैंप में मिलने वाली सुविधाएं-कैंप के दौरान भारत सरकार द्वारा निर्धारित शुल्कों पर आधार कार्ड के नए नामांकन एवं अपडेशन का कार्य किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, बच्चों के नए आधार कार्ड बनाने और अनिवार्य बायोमेट्रिक अपडेशन (Mandatory Biometric Update) की सुविधा पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध रहेगी। टोकन वितरण एवं अपील- भीड़ प्रबंधन और नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए विभाग द्वारा 23 अप्रैल से ही टोकन का वितरण शुरू किया जा रहा है। आधार अपडेशन के इच्छुक नागरिक समय रहते संबंधित डाकघर से अपना टोकन प्राप्त कर सकते हैं, ताकि कैंप के दिन कार्य सुगमता और शीघ्रता से पूर्ण हो सके। डाक विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि वे इस विशेष अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

इंदौर
इंदौर, गुरुवार 23 अप्रैल 2026

रणजीत टाइम्स

मंडी परिसर के समीप की जमीन पर अवैध अतिक्रमण और अपराधिक गतिविधियों पर लगाम: सचिव ओ.पी. खेड़े ने नगर निगम इंदौर का जताया आभार

देवी अहिल्याबाई होलकर फल एवं सब्जी मंडी प्रशासन और नगर निगम इंदौर के संयुक्त प्रयासों से मंडी परिसर के समीप नाले के किनारे बसे अवैध अतिक्रमण को पूरी तरह हटा दिया गया है। मंडी सचिव ओ.पी. खेड़े ने नगर निगम के विशेष सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया है।

अवैध गतिविधियों का केंद्र बन गई थीं झुग्गियां

विगत कुछ समय से मंडी की बाउंड्रीवाल के बाहर नाले के किनारे कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा अवैध झुग्गी-झोपड़ियाँ बना ली गई थीं। इन झुग्गियों में रहने वाले लोग मंडी परिसर में सक्रिय होकर गंभीर वारदातों को अंजाम दे रहे थे।

कार्रवाई के मुख्य कारण:

कृषि उपज की चोरी: -ये तत्व रात के अंधेरे में मंडी शेड से लहसुन, प्याज, आलू और अन्य सब्जियां चोरी कर दिन में बाहर बेच रहे थे।
-विरोध करने पर ये लोग चाकूबाजी, मारपीट और महिलाओं-बच्चों के माध्यम से झूठे आरोप लगाने जैसी धमकियां देते थे।
वाहनों में तोड़फोड़: मंडी में आने वाली गाड़ियों के शीशे फोड़ना और मोबाइल/सामान चोरी करना इनके द्वारा आम बात हो गई थी।

प्रशासन की सख्त कार्रवाई

मंडी समिति द्वारा पूर्व में दिए गए पत्र और निरंतर संवाद के बाद, नगर निगम इंदौर ने अपनी टीम को भेज कर इन अवैध निर्माणों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है। सचिव ओ.पी. खेड़े ने कहा, "मंडी व्यापारियों और किसानों के हितों की रक्षा हमारी प्राथमिकता है। नगर निगम के सहयोग से इस इलाके को अब असामाजिक तत्वों से मुक्त करा लिया गया है। इस कार्रवाई से मंडी में फिर से सुरक्षित वातावरण बनेगा और किसानों की उपज सुरक्षित रहेगी। हम आगे भी सतर्क रहेंगे ताकि भविष्य में ऐसा अतिक्रमण दोबारा न हो।"

बोरी से इंदौर जा रही यात्री बस पर हुआ पथराव बस अनियंत्रित होकर खाई में गिरी 20 से 25यात्री हुए घायल

दिलीप पाटीदार

धार जिले के सरदारपुर थाना की रिंगनोद चौकी अंतर्गत फिर से एक बस हादसे का शिकार हो गई सवारी के अनुसार बस पर किसी शरारती तत्व ने पथराव किया जिससे बस अनियंत्रित होकर गहरी खाई में उतर गई और उक्त बस दुर्घटना में करीब 25 यात्रियों के घायल होना बताया जा रहा है , जिनका उपचार नजदीकी स्वास्थ्य केंद्रों सहित राजगढ़ के निजी चिकित्सालय में भी करवाया जा रहा है , घटना के विषय में प्राप्त जानकारी अनुसार बोरी से इंदौर की ओर जा रही शुभम बस क्रमांक एमपी 11 पी 3455 रिंगनोद के टोल नाके के पास पहुंची जहां पर बस चालक पर निशाना साध कर पथराव किया गया जिससे चालक बस से अपना नियंत्रण खो बैठा और बस अनियंत्रित होकर सड़क से नीचे खाई में जा गीरी , जिसमें बस में सवार यात्रियों में चीख पुकार मच गई और सवार कई यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए , इसके बाद सूचना पर

रिंगनोद पुलिस टीम मौके पर पहुंची व घायलों को एंबुलेंस की सहायता से नजदीकी स्वास्थ्य केंद्रों पर तुरंत उपचार के लिए ले जाया गया , घटना में बस पर पथराव के बाद हुए हादसे से को लेकर सवारीयो में भी आक्रोश देखा गया और घटना के बाद मौके पर एकत्रित लोग हाथापाई करते भी दिखे , और विवाद बढ़ता देखकर रिंगनोद पुलिस कर्मियों ने लोगों को समझा बूझकर शांत करवाया वही इस घटना में बस बुरी तरह से क्षतिग्रस्त भी हो गई थी और करिब 25 यात्रियों को गंभीर चोटें आई है जिनका उपचार विभिन्न अस्पतालों में जारी है , एक यात्री के गंभीर घायल होने से उसे रेफर किया गया है , घटना के बाद पूरे मामले को लेकर रिंगनोद पुलिस जांच पड़ताल में जुटी है

वृत्त आंतरिक क्षेत्र क्र 2,आबकारी इंदौर की कार्यवाही

आदित्य शर्मा

इंदौर कलेक्टर महोदय जिला-इंदौर , श्री शिवम वर्मा जी के आदेश एवं सहायक आयुक्त आबकारी श्री अभिषेक तिवारी जी के द्वारा दिये निर्देशानुसार तथा कंट्रोलर महोदय देवेश चतुर्वेदी जी ,डिप्टी कंट्रोलर मनोज अग्रवाल जी के नेतृत्व में आज दिनांक 21.04.2026 को वृत्त आंतरिक 2 प्रभारी जया मुजाल्दे ने अपनी टीम के साथ बीजलपुर क्षेत्र में सायं कालीन गश्त के दौरान मुखबिर से प्राप्त सूचना पर ट्रेजर टाउन कॉलोनी के पीछे छापरी नामक स्थान पर मैदान से दोपहिया वाहन नीले रंग की activa MP09 UR8565 से 75 पाव देशी मदिरा मसाला व प्लेन के जब्त की गई ।आबकारी का वाहन देखकर आरोपी मौके से फरार हो गया ।आरोपी के विरुद्ध म.प्र.आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34 (1) क के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है।जब्त मदिरा एवं वाहन की कुल कीमत लगभग 86000 रुपए निकाली गई है। आज की कार्यवाही में वृत्त प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक जया मुजाल्दे एवं आबकारी आरक्षक उस्मान मिर्जा ,एलन बघेल और ड्राइवर रफीक चाचा का सराहनीय योगदान रहा ।

शिवपुरी: भगवा झंडे को लेकर उपजा विवाद शांत, प्रांशुल अग्रवाल ने प्रशासन की कार्रवाई पर जताया संतोष

शिवपुरी। शहर के हृदय स्थल माधव चौक पर पिछले कुछ दिनों से भगवा झंडे को हटाए जाने को लेकर चल रहा गतिरोध अब शांत होता नजर आ रहा है। इस पूरे घटनाक्रम और हिंदू समाज के आक्रोश के बाद, स्थानीय युवा और सामाजिक कार्यकर्ता प्रांशुल अग्रवाल ने मीडिया से रूबरू होकर अपना पक्ष रखा।

शांति भंग करने की कोशिश बर्दाश्त नहीं: प्रांशुल अग्रवाल-मीडिया से चर्चा के दौरान प्रांशुल अग्रवाल ने कहा कि शिवपुरी हमेशा से एक शांतिप्रिय शहर रहा है जहाँ सभी समाज और धर्म के लोग मिल-जुलकर रहते आए हैं। उन्होंने झंडा हटाए जाने की घटना को 'विकृत मानसिकता' वाले लोगों की करतूत बताया जो शहर का सौहार्द बिगाड़ना चाहते हैं।

नगर पालिका की भूमिका पर उठाए सवाल-प्रांशुल ने बताया कि परशुराम जयंती के अवसर पर लगाए गए भगवा ध्वज को हटाए जाने के बाद हिंदू समाज के युवाओं में गहरा रोष था। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले दो-तीन दिनों से वे और उनके साथी प्रशासन के चक्कर काट रहे थे, लेकिन उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिल रहा था।

प्रशासनिक आश्वासन और कार्रवाई-प्रांशुल अग्रवाल ने जानकारी दी कि आज नगर पालिका अध्यक्ष और अन्य अधिकारियों से सकारात्मक चर्चा हुई। उन्होंने कहा: "आज पूरे हिंदू समाज की एकता का ही परिणाम है कि हमारे धर्म की शान, हमारा भगवा ध्वज पुनः उसी स्थान पर पूरे मान-सम्मान के साथ स्थापित कर दिया गया है। नगर पालिका अध्यक्ष ने हमें आश्वासन दिया है कि किस अधिकारी के आदेश पर झंडा हटाया गया था, इसकी गहन जांच की जाएगी और दोषियों पर सख्त कार्रवाई होगी।"

समाज से शांति की अपील- अंत में उन्होंने सभी से शांति बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि वे अपने धर्म और संस्कृति के सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। झंडा पुनः लगने पर उन्होंने समस्त हिंदू समाज का आभार व्यक्त किया और इसे अपनी आस्था की जीत बताया।

“भारत आतंक के आगे कभी नहीं झुकेगा”

पहलगाम हमले की बरसी पर पीएम मोदी का सख्त संदेश, शहीदों को दी श्रद्धांजलि

भारत। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले की पहली बरसी पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को संबोधित करते हुए आतंकवाद के खिलाफ भारत की अडिग नीति को दोहराया है।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत कभी भी आतंक के सामने झुकेगा नहीं और आतंकियों के नापाक मंसूबे कभी सफल नहीं होंगे। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ‘एक्स’ पर भावुक संदेश साझा करते हुए कहा कि एक साल पहले आज ही के दिन पहलगाम में हुए जघन्य आतंकी हमले में जिन निर्दोष लोगों की जान गई, उन्हें देश कभी नहीं भूलेगा। उन्होंने कहा कि यह हमला केवल निर्दोष नागरिकों पर नहीं, बल्कि पूरे देश की आत्मा पर हमला था। उन्होंने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनकी स्मृति हमेशा देशवासियों के दिलों में जीवित रहेगी। यह हमला बीते वर्ष 22 अप्रैल को पहलगाम के पास बैसरन घाटी में हुआ था, जब आतंकियों ने पर्यटकों पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी थी। इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें देश के विभिन्न राज्यों से आए पर्यटक शामिल थे। इस घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था और लोगों में गहरा आक्रोश फैल गया था। जांच एजेंसियों ने इस हमले के पीछे पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का हाथ बताया था, जो लंबे समय से भारत में आतंकी गतिविधियों को अंजाम देता रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संदेश में कहा कि इस दुखद घटना की बरसी पर उनकी संवेदनाएं उन परिवारों के साथ हैं।

खरगोन से इंदौर जा रही लग्जरी बस अचानक घर की तरफ मुड़ गई

दीवार में जा घुसी, 30 से अधिक घायल

खरगोन (नप्र)। मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के कसरावद थाना क्षेत्र में बुधवार को एक बड़ा सड़क हादसा हो गया। खरगोन से इंदौर जा रही एक निजी यात्री बस अचानक अनियंत्रित होकर सड़क से नीचे उतर गई और सड़क किनारे स्थित एक मकान से जा टकराई। इस दुर्घटना में बस में सवार करीब 30 यात्रियों को चोटें आई हैं, जिनमें से 10 से अधिक की हालत गंभीर बताई जा रही है। एसडीओपी श्वेता शुक्ला ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि हादसा कसरावद तहसील के ग्राम ओझरा में दोपहर के समय हुआ। बस में करीब 30 से अधिक यात्री सवार थे। टक्कर इतनी तेज थी कि बस के आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और अंदर बैठे यात्री इधर-उधर गिर पड़े। हादसे में चालक और परिचालक भी घायल हुए हैं।

स्थानीय लोगों की मदद से घायल बाहर निकाले – सूचना मिलते ही पुलिस और स्थानीय प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया। सभी घायलों को तत्काल कसरावद के शासकीय अस्पताल पहुंचाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद करीब 25 घायलों को बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल रेफर किया गया है। श्वेता शुक्ला, एसडीओपी

अचानक बस का संतुलन बिगड़ा और जोरदार टक्कर हो गई

इसी बस में सवार इंजीनियरिंग कॉलेज के अंतिम वर्ष के छात्र क्षितिज गुप्ता ने बताया कि वह इंदौर परीक्षा देने जा रहे थे। अचानक बस का संतुलन बिगड़ा और जोरदार टक्कर हुई, जिससे वह उछलकर बस की छत से जा टकराए। उन्होंने बताया कि हादसे के समय बस की रफ्तार सामान्य से कुछ अधिक थी।

ओवरलोडिंग से पुलिस का इंकार

हालांकि एसडीओपी शुक्ला ने ओवरलोडिंग की आशंका से इनकार किया है। उनका कहना है कि बस ऑनलाइन बुकिंग के माध्यम से संचालित होती है और उसमें सीटों के अनुरूप ही यात्री सवार थे। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और दुर्घटना के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

बस हादसा कसरावद तहसील के ओझरा में हुआ, बस सड़क से उतरकर एक मकान की दीवार से टकरा गई। बस में करीब 30 से अधिक यात्री सवार थे। बस के आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया सभी यात्री सहित चालक-परिचालक भी घायल हैं।

कान्हा में भूख ने ली बाघ शावक की जान, शव के पास बैठी रही मां, पोस्टमार्टम रिपोर्ट में बड़ा खुलासा

मंडला (नप्र)। प्रदेश के प्रसिद्ध कान्हा टाइगर रिजर्व से एक चिंताजनक खबर सामने आई है। यहां सरही वन क्षेत्र में एक बाघ के नर शावक का शव मिलने से वन विभाग में हड़कंप मच गया। यह घटना 21 अप्रैल 2026 को बड़े अमाही नाला के पास बीट सरहीनकान में सामने आई। घटना की सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी के दिशा-निर्देशों के अनुसार तत्काल कार्रवाई शुरू की गई। पूरे क्षेत्र को सुरक्षित कर लिया गया और डॉग स्क्वॉड की मदद से बारीकी से जांच की गई, ताकि किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधि का पता लगाया जा सके।

मां और अन्य शावक शव के पास ही रहे मौजूद – जांच के दौरान एक भावुक कर देने वाला दृश्य भी सामने आया, जहां मृत शावक के पास ही उसकी मां और बाकी शावक मौजूद रहे। इससे यह स्पष्ट होता है कि घटना हाल ही में हुई थी और पूरा परिवार आसपास ही था।

डॉक्टरों की टीम ने किया पोस्टमार्टम – मामले की गंभीरता को देखते हुए जबलपुर, मोतीनाला और बिछिया से पशु चिकित्सकों की टीम बुलाई गई। विशेषज्ञों द्वारा मौके पर ही शावक का पोस्टमार्टम किया गया। शुरुआती जांच में शावक के सभी आंतरिक अंग सुरक्षित पाए गए, जिससे किसी बाहरी हमले की आशंका कम मानी जा रही है। डिप्टी डायरेक्टर, अमिता केबी, कान्हा टाइगर रिजर्व ने कहा शावक पिछले कुछ दिनों से कमजोर था। पोस्टमार्टम में पेट खाली पाया गया है, जो संकेत देता है कि उसने कई दिनों से कुछ नहीं खाया था। विस्तृत रिपोर्ट आने के बाद ही मौत की सटीक वजह स्पष्ट हो पाएगी।

भूख या बीमारी से मौत की संभावना– डिप्टी डायरेक्टर अमिता केबी के अनुसार, यह शावक पिछले कुछ दिनों से कमजोर नजर आ रहा था और दो दिनों से उसकी तलाश भी की जा रही थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि शावक का पेट खाली था, जिससे अंदेशा लगाया जा रहा है कि उसने कई दिनों से भोजन नहीं किया था। ऐसे में उसकी मौत भूख या किसी बीमारी के कारण होने की संभावना जताई जा रही है।

जल गंगा संवर्धन अभियान

वर्षा जल संरक्षण में प्रदेश का जनजातीय जिला डिंडोरी देश में प्रथम स्थान पर

● जिलों की सूची में खंडवा देश में दूसरे स्थान पर

भोपाल (नप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान मध्यप्रदेश ने केंद्र सरकार के जल संचय जन भागीदारी अभियान में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। जल शक्ति मंत्रालय द्वारा 22 अप्रैल को जारी रैंकिंग में प्रदेश का डिंडोरी जिला देश में पहले और खंडवा जिला दूसरे स्थान पर है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के वर्षा जल संरक्षण के आह्वान के अनुरूप प्रदेश सरकार मिशन मोड में कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में 19 मार्च से 30 जून 2026 तक जल गंगा संवर्धन अभियान संचालित किया जा रहा है। अभियान का उद्देश्य वर्षा जल का अधिकतम संचयन करना और पारंपरिक जल स्रोतों को पुनर्जीवित करना है।

अभियान के तहत प्रदेश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक कार्य किए जा रहे हैं। खेत तालाब, कूप रिचार्ज पिट, अमृत सरोवर, बोरवेल रिचार्ज सिस्टम, रिचार्ज शाफ्ट और रूफटॉप वर्षा जल संचयन जैसी संरचनाओं का निर्माण किया जा रहा है। इसके साथ ही जलाशयों और गड्ढों का पुनरुद्धार भी किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री का संदेश:जहां गिरे, जब गिरे, वर्षा जल का संग्रह करें – जल संरक्षण को जन-आंदोलन का रूप देने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा जल संचय, जनभागीदारी अभियान संचालित किया जा रहा है। यह पहल जल शक्ति अभियानः कैच द रेन के अंतर्गत 6 सितंबर 2024 से प्रारंभ की गई है।

डिंडोरी में 1.23 लाख से अधिक जल संरचनाएं

जल संचय जनभागीदारी अभियान के राज्य स्तरीय नोडल अधिकारी एवं आयुक्त श्री अवि प्रसाद ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा डैशबोर्ड के माध्यम से प्रदेश में किए जा रहे कार्यों की नियमित निगरानी की जा रही है। 22 अप्रैल की रैंकिंग में डिंडोरी जिले में देश में सर्वाधिक 1 लाख 23 हजार से अधिक जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया गया है। खंडवा जिले में 87 हजार से अधिक संरचनाएं निर्मित की गई हैं।

प्रदेश में 3.97 लाख से अधिक जल संरचनाएं निर्मित

प्रदेश में अब तक 3 लाख 97 हजार से अधिक जल संरचनाओं का निर्माण किया जा चुका है। वर्षा जल संरक्षण के इस कार्य में मध्यप्रदेश का उल्लेखनीय योगदान है।

पीएनजी कनेक्शन अनिवार्य: पाइपलाइन क्षेत्र में LPG बंद होगी, सरकार का बड़ा फैसला

इंदौर। प्रदेश में पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा है कि जिन क्षेत्रों में पीएनजी पाइपलाइन उपलब्ध है, वहां रहने वाले उपभोक्ताओं को अनिवार्य रूप से पीएनजी कनेक्शन लेना होगा। ऐसे उपभोक्ताओं को जून के बाद एलपीजी सिलेंडर नहीं दिया जाएगा। मंत्री ने बताया कि वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों, खासकर मिडिल ईस्ट के तनाव को देखते हुए केंद्र सरकार ने गैस आपूर्ति को स्थिर और सुरक्षित बनाने के लिए पीएनजी नेटवर्क का तेजी से विस्तार करने के निर्देश दिए हैं। इसके तहत घरेलू, व्यावसायिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं को एलपीजी से पीएनजी में शिफ्ट किया जा रहा है।

जागरूकता के लिए लगाए जा रहे कैंप- जिला प्रशासन, खाद्य विभाग, नगरीय निकाय और गैस कंपनियों के सहयोग से शहरों में लगातार कैंप आयोजित किए जा रहे हैं। इन कैंपों में लोगों को पीएनजी के फायदे और कनेक्शन प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी जा रही है।

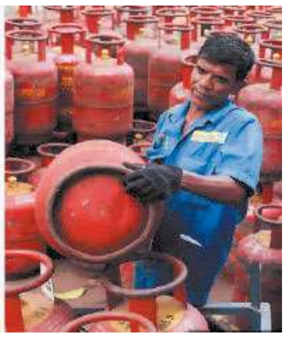

क्यों जरूरी है पीएनजी कनेक्शन- पीएनजी यानी पाइप्ड नेचुरल गैस, जो मुख्य रूप से मीथेन से बनी होती है, सीधे पाइपलाइन के जरिए घरों तक पहुंचती है। यह एलपीजी के मुकाबले सस्ती, सुरक्षित और सुविधाजनक मानी जाती है। इसमें सिलेंडर बुकिंग की झंझट नहीं होती और 24 घंटे गैस सप्लाई मिलती है।

पीएनजी के प्रमुख फायदे-
सस्ता ईंधनः एलपीजी की तुलना में कम खर्च
सुरक्षितः हवा से हल्की होने के कारण रिसाव पर ऊपर उड़कर फैल जाती है
सुविधाजनकः 24×7 गैस उपलब्ध, सिलेंडर की जरूरत नहीं
पर्यावरण के अनुकूलः कम कार्बन उत्सर्जन
उपयोग के अनुसार भुगतानः जितनी गैस इस्तेमाल, उतना ही बिल
कैसे लें कनेक्शन
पीएनजी कनेक्शन के लिए उपभोक्ताओं को रजिस्ट्रेशन फॉर्म भरना होगा। साथ में पहचान पत्र, मकान के स्वामित्व के दस्तावेज या मकान मालिक की एनओसी देना जरूरी है।

कंट्रोल रूम नंबर जारी- सरकार ने अलग-अलग जिलों के लिए गैस कंपनियों के कंट्रोल रूम नंबर भी जारी किए हैं, जिन पर संपर्क कर उपभोक्ता जानकारी और आवेदन कर सकते हैं। सरकार का साफ संदेश है—जहां पाइपलाइन है, वहां पीएनजी अपनाना अब विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता है।

वाशिंग सेंटर और निर्माण कार्यों में नर्मदा-बोरिंग पानी पर रोक, निगम ने जारी की 35 हाइड्रेंट की सूची

इंदौर। शहर में गहराते जल संकट को देखते हुए नगर निगम ने सख्त कदम उठाए हैं। अब वाशिंग सेंटर और निर्माण कार्यों में नर्मदा और बोरिंग के पानी के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसके विकल्प के रूप में निगम ने 35 हाइड्रेंट पॉइंट चिन्हित कर उनकी लोकेशन सार्वजनिक कर दी है, जहां से टैंकरों के माध्यम से पानी लिया जा सकेगा। नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा ने स्पष्ट किया कि जल संकट की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए यह निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि यदि किसी भी वाशिंग सेंटर या निर्माण स्थल पर नर्मदा या बोरिंग का पानी उपयोग करते पाया गया, तो संबंधित के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। वहीं वाशिंग सेंटर संचालक मोतीलाल कुमावत का भी मानना है कि शहर में पानी की स्थिति बेहद गंभीर हो चुकी है। उन्होंने बताया कि वाशिंग सेंटरों में प्रतिदिन लाखों लीटर पानी खर्च होता है, जिसमें नर्मदा और बोरिंग का पानी भी शामिल रहता है। इससे आसपास के क्षेत्रों में पेयजल संकट और बढ़ जाता है, इसलिए इस पर रोक लगाना जरूरी है। नगर निगम के इस फैसले को जल संरक्षण की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है। अब देखने वाली बात होगी कि इस आदेश का पालन कितनी सख्ती से कराया जाता है और इससे शहर के जल स्तर पर कितना प्रभाव पड़ता है।

ट्रेन में चूहे का आतंक : यात्री को काटा, रेलवे की लापरवाही उजागर

इंदौर। प्रयागराज से इंदौर होते हुए महू आने वाली प्रयागराज-डॉ अंबेडकर नगर एक्सप्रेस (14116) में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। ट्रेन में सफर कर रहे एक यात्री को सोते समय चूहे ने काट लिया, जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई। घटना के बाद रेलवे की कार्यप्रणाली और सफाई व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। जानकारी के अनुसार, महोबा से इंदौर आ रहे यात्री शिवसहाय राजपूत स्लीपर कोच में यात्रा कर रहे थे। सोमवार तड़के अचानक उनके पैर के अंगूठे में चूहे ने काट लिया। इससे खून निकलने लगा और दर्द के कारण उनकी हालत बिगड़ गई। उन्होंने तुरंत रेलवे से मदद की गुहार लगाई, लेकिन समय पर कोई ठोस सहायता नहीं मिल सकी। यात्री ने इस घटना की शिकायत सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव सहित रेलवे अधिकारियों से की। शिकायत को एक विभाग से दूसरे विभाग तक भेजा जाता रहा—रतलाम डीआरएम से प्रयागराज डीआरएम तक—लेकिन इस प्रक्रिया में एक दिन से ज्यादा समय लग गया। इस दौरान ट्रेन में पहुंचे रेलवे स्टाफ ने जिस जगह से चूहा आने की आशंका थी, वहां केवल कागज लगाकर छेद बंद कर दिया। यात्री का आरोप है कि यह समाधान अस्थायी और लापरवाही भरा था, जिससे खतरा बना हुआ है। घटना के बाद जब इंदौर के अधिकारियों से जवाब मांगा गया, तो उन्होंने साफ कहा कि ट्रेन की सफाई और मेंटेनेंस प्रयागराज से होता है, इसलिए इसकी जिम्मेदारी वहीं की है। इस बयान ने रेलवे की जवाबदेही पर और सवाल खड़े कर दिए हैं। इस पूरे मामले ने एक बार फिर ट्रेनों में सफाई व्यवस्था और यात्रियों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं सामने ला दी हैं। यात्रियों का कहना है कि ऐसी घटनाएं न केवल असुविधाजनक हैं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी खतरनाक साबित हो सकती हैं। रेलवे को इस दिशा में ठोस और त्वरित कदम उठाने की जरूरत है।

पीथमपुर में भीषण आग पर काबू पाने में रोबोट बना 'हीरो', पहली बार हुआ इस्तेमाल

इंदौर/पीथमपुर। औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर के सेक्टर-3 स्थित एक कंपनी में मंगलवार देर रात भीषण आग लग गई। केमिकल यूनिट में लगी आग ने देखते ही देखते विकराल रूप ले लिया। आग इतनी तेज थी कि स्थानीय फायर ब्रिगेड के लिए उस पर काबू पाना मुश्किल हो गया। रात करीब 12 बजे पीथमपुर की दमकल टीम ने आग बुझाने की कोशिश शुरू की, लेकिन लगातार भड़कती लपटों के चलते सफलता नहीं मिल सकी। इसके बाद इंदौर फायर ब्रिगेड से मदद मांगी गई। हालात की गंभीरता को देखते हुए इंदौर से विशेष फायर फाइटिंग रोबोट को मौके पर रवाना किया गया। बताया जा रहा है कि इस आधुनिक रोबोट का हाल ही में शहर के राजवाड़ा क्षेत्र में ट्रायल किया गया था, और पीथमपुर की घटना में इसका पहली बार वास्तविक उपयोग किया गया।

स्कूल बसों में स्पीड गवर्नर अनिवार्य, सुरक्षा में लापरवाही पर होगी सख्त कार्रवाई

इंदौर। विद्यार्थियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए जिला प्रशासन ने स्कूल बसों के संचालन को लेकर सख्त गाइडलाइन जारी की है। कलेक्टर शिवम वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में स्पष्ट किया गया कि स्कूली वाहनों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्रवाई होगी। बैठक में स्कूलों, कॉलेजों, निजी शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधियों और संबंधित अधिकारियों की मौजूदगी में विद्यार्थियों के सुरक्षित परिवहन के लिए व्यापक दिशा-निर्देश तय किए गए। कलेक्टर ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा से समझौता किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं है और सभी संस्थानों को निर्धारित मानकों का कड़ाई से पालन करना होगा।

बसों में स्पीड गवर्नर और सुरक्षा उपकरण अनिवार्य- प्रशासन ने सभी स्कूल बसों में स्पीड गवर्नर लगाना अनिवार्य किया है, ताकि वाहनों की गति नियंत्रित रहे और दुर्घटनाओं की आशंका कम हो। इसके अलावा हर बस में फायर एक्सटिंग्विशर, फर्स्ट-एड बॉक्स, जीपीएस और सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने के निर्देश दिए गए हैं। आपातकालीन निकास द्वार, अलार्म सिस्टम और पैनिक बटन की व्यवस्था भी जरूरी होगी।

ओवरलोडिंग और लापरवाही पर रोक- निर्देश दिए गए हैं कि बसों में निर्धारित क्षमता से अधिक बच्चों को नहीं बैठाया जाएगा और किसी भी छात्र को ड्राइवर के केबिन में बैठने की अनुमति नहीं होगी। चालक के पास कम से कम 5 वर्ष का अनुभव होना अनिवार्य रहेगा और ड्यूटी के दौरान नशामुक्त रहना सुनिश्चित किया जाएगा।

बसों की पहचान और निगरानी- सभी स्कूल बसों का रंग पीला होना अनिवार्य होगा तथा उन पर 'स्कूल बस' स्पष्ट रूप से लिखा जाएगा। बस पर स्कूल का नाम और संपर्क नंबर भी अंकित करना जरूरी होगा। यदि बस किराए पर ली गई है, तो उस पर 'ऑन स्कूल ड्यूटी' लिखा होना चाहिए। प्रशासन ने जीपीएस और सीसीटीवी के माध्यम से बसों की नियमित मॉनिटरिंग करने के निर्देश भी दिए हैं, ताकि बच्चों की सुरक्षा पर सतत निगरानी रखी जा सके।

छात्राओं की सुरक्षा पर विशेष ध्यान- छात्राओं के परिवहन के दौरान महिला परिचालक या महिला स्टाफ की उपस्थिति अनिवार्य की गई है। बस में कंडक्टर, शिक्षक या जिम्मेदार व्यक्ति की मौजूदगी भी जरूरी होगी।

अन्य महत्वपूर्ण निर्देश- बसों में रिफ्लेक्टिव टेप और स्टॉप साइन लगाना अनिवार्य
सीटें गैर-ज्वलनशील सामग्री की हों
काले शीशों या परदों पर प्रतिबंध
वैध रजिस्ट्रेशन, फिटनेस, परमिट, बीमा और पीयूसी अनिवार्य
चालक द्वारा वाहन चलाते समय मोबाइल उपयोग पर रोक
बारिश के दौरान जलभराव वाले मार्गों पर बस संचालन नहीं
स्कूलों को अतिरिक्त जिम्मेदारी
स्कूल प्रबंधन को बस चालकों का पूरा रिकॉर्ड (नाम, मोबाइल, लाइसेंस आदि) जमा करना होगा और समय-समय पर उनका प्रशिक्षण व काउंसलिंग भी करानी होगी। साथ ही, सुरक्षा मॉक ड्रिल आयोजित करने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर वर्मा ने साफ कहा कि ये नियम केवल औपचारिकता नहीं बल्कि बच्चों की सुरक्षा से सीधे जुड़े हैं, इसलिए हर स्तर पर सख्ती से इनका पालन सुनिश्चित किया जाएगा।

‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ की सार्थक अभिव्यक्ति है सहजयोग ध्यान पद्धति

भारतीय दर्शनशास्त्र समूचे विश्व में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये -प्रसिद्ध है। प्राचीन काल से अनेक देशों के विद्वान भारत में पहुँचे और इस योग भूमि में आकर उन्होंने अध्यात्मिकता की जड़ें खोज निकाली। उस अध्यात्मिकता का सार है आत्मतत्व। हम सभी एक ही चेतनतत्व से बने हैं। परम-पूज्य श्रीमाताजी प्रणित सहजयोग हमें हमारे चेतनतत्व से ,आत्मतत्व से, ही परिचित कराता है। सहजयोग में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त साधक इस ज्ञान को अपने मज्जा तंतू पर जानता है। प. पू. श्रीमाताजी कहते हैं, आत्मानुभूति एक सुंदर अवस्था है। जब आपको आत्मबोध हो जाता है, तो आपका पूरा तन, मन, सबकुछ एकीकृत हो जाता है और इसके बाद आप जो कुछ भी करते है, वह आनंद प्रवाहित करता है। इसलिये जब आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति लिखता है तो वह

चैतन्यरूपी आनंद उसकी लेखनी में आता है, मूर्ति बनाता है तो वह मूर्ति चैतन्यित हो जाती है,अगर वह बीज बोता है तो है उसकी खेती की सारी फसल चैतन्य से आंदोलित होती हैं । अब यह सब बहुत विलक्षण है। यह एक मात्र चीज है, जिसे आपको हासिल करना है, बेकार के चमत्कारों की ओर आकर्षित न हों। अपने आत्मा के चमत्कारों को माँगे । जब आत्मा की अभिव्यक्ति होती है तब आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे कि आप कितना सुंदर महसूस करते हैं, और कितनी सुंदरता से आप इसे कार्यान्वित करते हैं।

हमारे सारे उपनिषद् इस आत्म तत्व का ही चितंन और मनन करते हैं। इसे सहजयोग ध्यान की अनुभूति से जाना जा सकता है। उपनिषद्कार कहते हैं, ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ अर्थात, इस पृथ्वीतल पर विराजमान सभी मानव सुखी, निरामय और आनंदपूर्ण बनें। उनके तीनों तापों की अर्थात्, अधिदैविक ,अध्यात्मिक और अधिभौतिक तापों की निवृत्ति हो जाये ,और वे दुःख के भागीदार न बने। सहजयोग में जब साधक को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होता है तब वह साधक आदिशक्ति स्वरुपिणी माँ कुंडलिनी के प्रकाश में अपने आपको जानने लगता है। नियमित ध्यान से यह शक्ति उसके शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक पीड़ा का शमन करती है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को सभी प्रकार की आपदाओं से भी बचाया जाता है, दिनों-दिन उसका चित्त आत्मसाक्षात्कार के आनंद मे तल्लीन होकर वह बहुत गुणात्मक और उच्च कोटि का आध्यात्मक जीवन व्यतीत करता है। आपको भी अगर इस आनंद का एक भाग बनना है ,तो आज ही सीखें सहजयोग ध्यान । सहज योग निशुल्क भी है और आसान भी सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी हेतु टोल फ्री नंबर 1800 2700 800

संकट में खेती

एक तरफ जलवायु परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ा है, तो दूसरी ओर अप्रत्यक्ष प्रभाव आय की हानि और अनाज की बढ़ती कीमतों के रूप में देखने को मिल रहा है।वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन वैश्विक मुद्दे के रूप में उभरा है। यह कोई एक देश या राष्ट्र से संबंधित अवधारणा नहीं है, बल्कि एक वैश्विक अवधारणा है जो समस्त पृथ्वी के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन से भारत सहित पूरी दुनिया में बाढ़, सूखा, कृषि संकट एवं खाद्य सुरक्षा के साथ बीमारियों का भी खतरा बढ़ा है। हालांकि, भारत की बड़ी आबादी (लगभग साठ फीसद) आज भी कृषि पर निर्भर है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से आज कृषि भी अछूती नहीं है। इसलिए खेती पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखना बहुत जरूरी है। बदलते मौसम के प्रभाव से केवल फसलों का ही उत्पादन प्रभावित नहीं हो रहा है, बल्कि उनकी गुणवत्ता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। यह देश की खाद्य सुरक्षा के लिए एक अहम चुनौती है।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने चेतावनी दी है कि उच्च तापमान, सूखा, बाड़ और मिट्टी की उर्वरता में कमी के कारण मध्य-पूर्व के कई देशों में कृषि को बड़े पैमाने पर नुकसान हो सकता है। बदलते पर्यावरण के कारण खेती के सामने बड़ा संकट है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2040 तक तापमान 1.5 डिग्री तक बढ़ता है, तो फसलों की पैदावार पर इसका गंभीर असर पड़ेगा। बढ़ते कार्बन उत्सर्जन से इस शताब्दी में दुनिया भर में भुखमरी, बाढ़ और नागरिकों का पलायन बढ़ने की बात कही जा रही है। अगर तापमान में बढ़ोतरी होती है, तो एशियाई देशों में कृषि पैदावार तीस फीसद तक नीचे आ सकती है।

विकास की तीव्र आंधी में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि विश्व की अधिकांश आबादी के लिए रोजी-रोटी की व्यवस्था करना मुश्किल हो जाएगा। वर्ष 2030 तक भुखमरी को खत्म करने का हमारा लक्ष्य भी अधूरा रह सकता है। गौरतलब है कि देश में पिछले चालीस वर्षों में वर्षा की मात्रा में निरंतर गिरावट आ रही है। बीसवीं सदी के आरंभ में औसत वर्षा 141 सेंटीमीटर थी, जो नब्बे के दशक में घट कर 119 सेंटीमीटर रह गई है। गंगोत्री हिमनद भी प्रतिवर्ष सिकुड़ रहा है। नदियों में जल कम हो रहा है। पानी की कमी के कारण खेती घाटे का सौदा बनती जा रही है।

एक तरफ जलवायु परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ा है, तो दूसरी ओर अप्रत्यक्ष प्रभाव आय की हानि और अनाज की बढ़ती कीमतों के रूप में देखने को मिल रहा है। जबकि फसलों की उपज बढ़ाने में उपजाऊ मिट्टी, पानी, अनुकूल वातावरण और कीट-पतंगों से बचाव आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन इनमें से किसी भी मानक में परिवर्तन होने से फसलों की पैदावार प्रभावित होती है। जलवायु परिवर्तन के कारण पिछले कई दशकों में तापमान बढ़ता गया है।

कुछ पौधे ऐसे होते हैं, जिन्हें एक विशेष तापमान की आवश्यकता होती है। वायुमंडल में तापमान बढ़ने पर उनकी उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जैसे गेहूं, सरसों, जौ और आलू आदि इन फसलों को कम तापमान की आवश्यकता होती है। तापमान का बढ़ना इनके लिए हानिकारक होता है। इसी प्रकार, ज्यादा तापमान बढ़ने से मक्का, ज्वार और धान आदि फसलों का नुकसान हो सकता है, क्योंकि ज्यादा तापमान के कारण इन फसलों में दाना नहीं बनता या फिर कम बनता है।

जलवायु परिवर्तन खाद्य सुरक्षा के सभी चार आयामों- खाद्य उपलब्धता, खाद्य पहुंच, खाद्य उपयोग और खाद्य प्रणाली स्थिरता को प्रभावित करेगा। यदि धरातल का तापमान ऐसे ही बढ़ता रहा, तो हमारे सामने भोजन का संकट उत्पन्न हो जाएगा। तापमान की बढ़ती गति को देखें, तो आंकड़े बताते हैं कि इस सदी के अंत तक धरती का तापमान 3.7 डिग्री से 4.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाएगा। जिसका सीधा असर कृषि उत्पादन पर होगा। उदाहरण के लिए आज जहां गेहूं, जौ, सरसों और आलू की खेती हो रही है, तापमान बढ़ने से इन फसलों की खेती नहीं हो सकेगी, क्योंकि इन फसलों को ठंडक की आवश्यकता पड़ती है।

ठीक इसी प्रकार अधिक तापमान बढ़ने से मक्का, धान या ज्वार आदि फसलों का चरण हो सकता है, क्योंकि इन फसलों में अधिक तापमान के कारण दाना नहीं बनता है अथवा कम बनता है। इससे इन फसलों की खेती करना असंभव हो सकता है। इसके अतिरिक्त तापमान बढ़ने से वर्षा में कमी होती है। इससे मिट्टी में नमी समाप्त हो जाती है। इसी के साथ सूखे की संभावना भी बढ़ी है। इतना ही नहीं जलवायु परिवर्तन मिट्टी की सेहत को भी प्रभावित कर रहा है, क्योंकि बढ़ता तापमान प्राकृतिक नाइट्रोजन कम कर रहा है और इसे बढ़ाने के लिए हम रासायनिक खादों का बेतहाशा इस्तेमाल कर रहे हैं जो मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित कर रही है।

आज पूरे विश्व में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पड़ रहा है और यह कहीं ज्यादा, तो कहीं कम महसूस किया जा रहा है। जलवायु परिवर्तन जोखिम सूचकांक में भारत शीर्ष बीस देशों में शामिल है। पिछले चार दशकों में हमारी धरती का तापमान 0.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है, जिसके कारण बाढ़, सूखे और तूफान जैसी कुदरती आपदाएं भी बढ़ी हैं। चूंकि अपने देश में ज्यादातर किसानों के पास छोटा रकबा है, इसलिए इन आपदाओं के कारण उनकी आमदनी बुरी तरह गिर रही है।

भारत के लिए यह और अधिक चिंता की बात है, क्योंकि हमारे यहां साठ फीसद जनसंख्या खेती से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी है। कृषि ही उनके जीवनयापन का मुख्य स्रोत है। जलवायु परिवर्तन न सिर्फ आजीविका, पानी की आपूर्ति और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा कर रहा है, बल्कि खाद्य सुरक्षा के लिए भी चुनौती खड़ा कर रहा है। वर्ष 2050 तक विश्व की आबादी वर्ष कर साढ़े नौ अरब हो जाएगी। इसका अर्थ यह है कि हमें दो अरब अतिरिक्त लोगों के लिए 70 फीसद ज्यादा भोजन पैदा करना होगा।

इसलिए अब खाद्य और कृषि प्रणाली को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाना होगा और इसे ज्यादा उपजाऊ तथा टिकाऊ बनाने की जरूरत होगी। ऐसे में कृषि के विभिन्न तरीकों का पुनरावलोकन कर पर्यावरण को कम से कम क्षति पहुंचाने वाली तकनीकों का इस्तेमाल वांछनीय है। जलवायु परिवर्तन न सिर्फ कृषि के लिए बल्कि संपूर्ण मानव सभ्यता के लिए भी खतरे के रूप में सामने आ रहा है। लिहाजा कोई भी देश इसके असर से बच नहीं सकता।

निसंदेह यह चिंता की बात है कि बढ़ते तापमान का संकट बहुत गहरा है। यह भारत के लिए बड़ी समस्याएं पैदा करेगा। इसलिए जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में ऐसे तरीकों की समीक्षा किया जाना आवश्यक है, जिससे हमारे कृषक जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करते हुए फसलों का उत्पादन कर सकें और उन्हें समुचित लाभ भी मिल सके। साथ ही, कृषि से उनका मोह भंग भी न हो। चूंकि जलवायु परिवर्तन किसी एक देश अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं है, इसलिए इसमें कमी लाने के लिए सभी स्तरों पर ठोस उद्यमी की जरूरत है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि के लिए, बल्कि संपूर्ण मानव सभ्यता के लिए खतरा है। कोई भी देश इसकी आंच से बच नहीं सकता।

जलवायु परिवर्तन जोखिम सूचकांक में भारत शीर्ष बीस देशों में शामिल हैं। चूंकि अपने देश में ज्यादातर किसानों के पास छोटा रकबा है, इसलिए प्राकृतिक आपदाओं के कारण उनकी आमदनी बुरी तरह गिर रही है। देश के लिए यह और अधिक चिंता की बात है, क्योंकि हमारे वहां 60 फीसद जनसंख्या खेती से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी है। कृषि ही उनके जीवनयापन का मुख्य स्रोत है। जलवायु परिवर्तन न सिर्फ आजीविका, पानी की आपूर्ति और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा कर रहा है, बल्कि खाद्य सुरक्षा के लिए भी चुनौती खड़ा कर रहा है।

सचिन तेंदुलकर दंतेवाड़ा में आदिवासी बच्चों से मिले

ऑटोग्राफ दिया, पत्नी अंजलि, बेटी सारा और बहू सानिया ने बच्चों संग बिताया समय

जगदलपुर/दंतेवाड़ा (एजेंसी)। सचिन तेंदुलकर बुधवार को छत्तीसगढ़ दौरे पर थे। वे प्राइवेट जेट से अपने परिवार के साथ जगदलपुर एयरपोर्ट पर उतरे। यहां से वे सीधे दंतेवाड़ा के छिंदनार पहुंचे। जहां आदिवासी बच्चों और खेल में रुचि रखने वाले बच्चों से मुलाकात की। सचिन तेंदुलकर ने जगदलपुर एयरपोर्ट पर मीडिया से कहा कि दंतेवाड़ा में 50 से ज्यादा खेल मैदान का 5 हजार बच्चों को फायदा मिलेगा। वहीं, कार्यक्रम के लिए स्कूली बच्चे सुबह 9 बजे से पहुंच गए थे। यहां भीषण गर्मी में बच्चों को अलग-अलग गांव से कार्यक्रम स्थल तक लाया गया। टीचर ने बताया कि एक बस में 100 से ज्यादा बच्चों को बैठाकर लाया गया। जबकि बस 50 सीटर है। जगदलपुर में सचिन ने बच्चों को बल्ले पर ऑटोग्राफ दिया। सचिन को सिहाड़ी बीज की माला पहनाई गई। बेटी सारा और बहू सानिया भी साथ दिखे।

अच्छे इंसान बनो ताकि लोग आपको याद रखें

कार्यक्रम में सचिन तेंदुलकर ने कहा कि हमें पता चला कि बस्तर में बच्चों के लिए ग्राउंड ही नहीं है। मेरी जिंदगी की शुरुआत मैदान से हुई थी। मैं बच्चों को देखता हूं जैसे मेरी जर्नी स्टार्ट हुई, हम मैदान में जाते हैं अच्छे कोच की जरूरत होती है। हमने सोचा था कि हम अपने कोच को यहां भेजेंगे ताकि वे 100 टीचर्स को ट्रेनिंग दें। यहां डायमंड बहुत हैं, बस सही तरीके से पॉलिश करना जरूरी है। यही उम्र है खेलने कूदने की। यही उम्र है दोस्त बनाने की। मैं समझता हूं जो एक सही दोस्त होता है वो आईना दिखता है, परछाई कभी साथ नहीं छोड़ती, इसलिए ऐसे दोस्त रखो जो ऐसे ही बनकर रहे। मेरे पिता ने एडवाइस दी कि क्रिकेट कितने साल चलेगा, मैंने कहा 10 से 15 साल, मेरे पिता ने कहा था उसके बाद क्या? आप अच्छे इंसान बनो ताकि लोग आपको याद रखें।

बच्चों के साथ समय, ग्रामीण जीवन को समझने की कोशिश

परिवार ने बच्चों को खिलौने दिए और उनके साथ समय बिताया। ग्रामीणों से बातचीत के दौरान जीवनशैली, जरूरतों और समस्याओं को समझने पर खास फोकस रहा। इससे यह दौरा सिर्फ औपचारिक न रहकर जमीनी जुड़ाव का प्रयास नजर आया।

ग्रामीणों की जीवन शैली और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी भी जुटाई

इस दौरान ग्रामीण महिलाओं ने पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका स्वागत किया। ग्रामीणों ने उनके साथ तस्वीरें भी खिंचवाईं। तेंदुलकर परिवार ने वनांचल में ग्रामीणों की जीवन शैली और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारी भी जुटाई। इस दौरान सारा तेंदुलकर ने एक आदिवासी बच्चे को गोद में लेकर प्यार और दुलार करती हुई भी नज़र आई।

जन स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण कर डॉक्टरों से चर्चा की

बुधवार सुबह नाश्ते के बाद तीनों गनियारी प्राइमरी हेल्थ सेंटर पहुंचीं। यहां स्वास्थ्य सेवाओं का जायजा लिया गया और फुलवारी केंद्र का निरीक्षण किया गया। डॉक्टरों के साथ बैठक कर व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई। ग्रामीणों ने बताया कि, गनियारी जन स्वास्थ्य समिति वनांचल के विभिन्न गांवों में निःशुल्क स्वास्थ्य और शिक्षा कार्यक्रम संचालित करती है। तेंदुलकर परिवार ने समिति की तरफ से संचालित फुलवारी केंद्र का अवलोकन किया। उन्होंने ग्राम बम्हनी में जनस्वास्थ्य उपकेंद्र और बालवाड़ी में वनक्षेत्र के गरीब बच्चों के रहन-सहन और उपस्वास्थ्य केंद्र के संचालन को करीब से देखा। फुलवारी केंद्र में बैगा बच्चों के पोषण और शिक्षा की स्थिति के बारे में जानकारी ली। समिति की चिकित्सकीय टीम ने उन्हें स्वास्थ्य कार्यक्रमों के बारे में बताया।

फैटी फूड बढ़ा सकता है कैंसर का जोखिम

नई दिल्ली। हमारे रोजमर्रा के खाने का असर सिर्फ वजन या फिटनेस तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शरीर के भीतर चल रही गंभीर बीमारियों की दिशा भी तय कर सकता है। हाल ही में सामने आई एक नई वैज्ञानिक स्टडी ने यह चिंता और गहरा दी है कि गलत खानपान, खासकर ज्यादा फैट वाला भोजन, कैंसर जैसी गंभीर बीमारी को और आक्रामक बना सकता है।

अमेरिका की प्रिंसटन यूनिवर्सिटी में किए गए इस अध्ययन ने यह संकेत दिया है कि हमारी डाइट केवल बीमारी होने या न होने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भी तय कर सकती है कि बीमारी कितनी तेजी से बढ़ेगी। शोधकर्ताओं के अनुसार, हाई-फैट डाइट खासतौर पर कुछ प्रकार के कैंसर में ट्यूमर की ग्रोथ को तेज कर सकती है, जो एक गंभीर चेतावनी है।

इस रिसर्च में विशेष रूप से ट्रिपल-नेगेटिव ब्रेस्ट कैंसर पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह ब्रेस्ट कैंसर का एक ऐसा प्रकार है, जिसे चिकित्सा विज्ञान में काफी जिद्दी और खतरनाक माना जाता है, क्योंकि इस पर सामान्य हार्मोनल या टार्गेटेड थेरेपी का असर सीमित होता है। यही कारण है कि इस पर होने वाली कोई भी नई खोज बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती है। अध्ययन में वैज्ञानिकों ने एक नई और उन्नत तकनीक का इस्तेमाल किया। उन्होंने प्रयोगशाला में 3D ट्यूमर मॉडल तैयार किया, जिसे इंसानी शरीर जैसी परिस्थितियों में रखा गया। इस मॉडल को प्लाज्मा जैसे तरल वातावरण में विकसित किया गया, ताकि यह वास्तविक शरीर के ट्यूमर की तरह व्यवहार कर सके। इसके बाद विभिन्न प्रकार की डाइट परिस्थितियों का प्रभाव जांचा गया।

शोध के दौरान चार प्रमुख स्थितियों—हाई इंसुलिन, हाई ग्लूकोज, हाई कीटोन और हाई फैट—का परीक्षण किया गया। इनमें सबसे चौंकाने वाला परिणाम हाई-फैट डाइट में सामने आया। वैज्ञानिकों ने पाया कि जब ट्यूमर को ज्यादा फैट वाले वातावरण में रखा गया, तो कैंसर कोशिकाएं तेजी से बढ़ने लगीं और ट्यूमर का आकार भी उल्लेखनीय रूप से बड़ा हो गया। इस अध्ययन से जुड़ी शोधकर्ता मरियम कोहराम के अनुसार, "हाई-फैट डाइट ने ट्यूमर के विकास को सबसे ज्यादा बढ़ावा दिया। यह असर अन्य सभी परिस्थितियों की तुलना में अधिक आक्रामक था।" वहीं, इस रिसर्च से जुड़ी प्रोफेसर नेल्सन ने भी स्वीकार किया कि उनका उद्देश्य ऐसी डाइट की पहचान करना था जो कैंसर की गति को धीमा करे, लेकिन इसके विपरीत उन्हें एक ऐसा कारक मिला जो इसे और तेज कर रहा था।

भारत के संदर्भ में यह शोध और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। देश में हर साल लगभग 2 लाख महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के मामले सामने आते हैं, जिनमें से करीब 30 प्रतिशत मामले ट्रिपल-नेगेटिव श्रेणी में आते हैं। ऐसे में खानपान से जुड़े इस तरह के निष्कर्ष भविष्य की चिकित्सा रणनीतियों के लिए बेहद अहम साबित हो सकते हैं। हालांकि, विशेषज्ञ इस बात को लेकर स्पष्ट हैं कि इस अध्ययन को सीधे तौर पर डाइट गाइडलाइन के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

बढ़ता प्रदूषण और बिगड़ती खान-पान

नई दिल्ली। आज की तेज रफ्तार जिंदगी, बढ़ता प्रदूषण और बिगड़ती खान-पान की आदतों ने शरीर के अंदर गंदगी और टॉक्सिन्स जमा कर दिए हैं, जिसका असर सीधे हमारी त्वचा, बालों और पाचन तंत्र पर दिखाई देता है। महंगे ब्यूटी प्रोडक्ट्स भले ही थोड़ी देर के लिए चमक दे दें, लेकिन असली निखार अंदर से आता है। ऐसे में सुबह खाली पेट कुछ खास जूस पीना शरीर को डिटॉक्स करने और सेहत सुधारने का आसान और असरदार तरीका बन सकता है। सबसे पहले बात करते हैं ABC जूस की, जिसे 'मिरेकल ड्रिंक' भी कहा जाता है। इसमें सेब, चुकंदर और गाजर का मिश्रण होता है, जो विटामिन A, C और आयरन से भरपूर होता है। यह जूस खून को साफ करने, ब्लड सर्कुलेशन बेहतर बनाने और चेहरे पर नैचुरल ग्लो लाने में मदद करता है। नियमित सेवन से त्वचा पर गुलाबी निखार नजर आने लगता है। इसके बाद आता है एलोवेरा जूस, जो पाचन और स्किन के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। यह जूस पेट को साफ रखने, एसिडिटी कम करने और मुंहासों को घटाने में मदद करता है। जिन लोगों को बार-बार पेट खराब होने या स्किन ब्रेकआउट की समस्या होती है, उनके लिए यह काफी उपयोगी हो सकता है। तीसरा है हल्दी शॉट, जो आजकल हेल्थ ट्रेंड बन चुका है। हल्दी में मौजूद करक्यूमिन तत्व शरीर में सूजन को कम करता है और इम्यूनिटी बढ़ाता है। सुबह खाली पेट इसका सेवन करने से शरीर अंदर से मजबूत होता है और त्वचा भी साफ दिखने लगती है।

चौथा जूस है ग्रीन जूस, जिसमें पालक, खीरा, नींबू और पुदीना शामिल होते हैं। यह जूस शरीर को हाइड्रेट रखने के साथ-साथ डिटॉक्स करता है और ब्लोटिंग यानी पेट फूलने की समस्या को कम करता है। इसमें मौजूद फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर को साफ रखने में मदद करते हैं।

पांचवां विकल्प है आंवला जूस, जो विटामिन C का बेहतरीन स्रोत है। यह न सिर्फ इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है, बल्कि बालों को झड़ने से रोकने और त्वचा को चमकदार बनाने में भी मदद करता है। नियमित सेवन से बाल मजबूत और घने बनते हैं।

नेपाल के लुम्बिनी में ऐतिहासिक पहल: दलित अधिकारों पर बिल पास

नेपाल। सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक कदम उठाते हुए नेपाल के लुम्बिनी प्रांत ने दलित समुदाय के अधिकारों और कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक विधेयक पारित किया है। इस फैसले के साथ लुम्बिनी देश का पहला ऐसा प्रांत बन गया है जिसने दलितों की आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा को केंद्र में रखते हुए अलग से कानून बनाने की पहल की है।

यह कदम न केवल नेपाल के भीतर बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के सामाजिक ढांचे के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में देखा जा रहा है। नेपाल में पहले से ही दलितों के खिलाफ भेदभाव को रोकने और समान अधिकार सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कानून मौजूद है, लेकिन लुम्बिनी प्रांत द्वारा पारित यह नया विधेयक अधिक व्यावहारिक और जमीनी जरूरतों पर केंद्रित है। इसमें दलित समुदाय के लोगों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए ठोस प्रावधान किए गए हैं, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में वास्तविक बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है।

इसके साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर दलित छात्रों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु छात्रावास की सुविधा देने का भी प्रावधान किया गया है। इतना ही नहीं, प्रांत के भीतर संचालित सरकारी, निजी और सामुदायिक स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रावासों में दलित छात्रों को प्राथमिकता के आधार पर स्थान देने की व्यवस्था भी इस बिल में शामिल है। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी यह विधेयक बेहद महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। इसके तहत गंभीर और जटिल बीमारियों से पीड़ित गरीब दलित नागरिकों को मुफ्त इलाज की गारंटी दी गई है। प्रांतीय सरकार द्वारा निर्धारित अस्पतालों में उन्हें बिना आर्थिक बोझ के उपचार उपलब्ध कराया जाएगा। यह प्रावधान उन परिवारों के लिए राहत लेकर आएगा, जो आर्थिक तंगी के कारण इलाज नहीं करा पाते थे।

पाकिस्तान तो फेल रहा भारत कर दिखाएगा

राजनाथ सिंह ने दिए ईरान-यूएस के बीच मध्यस्थता के संकेत

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान और अमेरिका के बीच 28 फरवरी से तनाव की स्थिति बनी हुई है। कई दिनों तक हुए हमलों के बाद दोनों देशों के बीच सीजफायर हुआ, लेकिन अभी तक शांति स्थापित नहीं हो सकी है। दोनों देश अपनी-अपनी शर्तों पर अड़े हुए हैं। पाकिस्तान ने इस मध्यस्थता की कोशिश की है, लेकिन वह अभी तक पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सका है। इस सबके बीच भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बर्लिन में एक बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि कल ऐसा समय भी आ सकता है जब भारत अपनी भूमिका निभाए और इसमें सफलता भी हासिल करे। राजनाथ सिंह के इस बयान के बाद से भारत के द्वारा मध्यस्थता की अटकलें तेज हो गई हैं। ईरान और अमेरिका के रिश्तों पर राजनाथ सिंह ने कहा,भारत ने कोशिश की है, लेकिन हर चीज का एक समय होता है। हो सकता है कि कल ऐसा समय आए जब भारत इसमें अपनी भूमिका निभाए और सफलता भी हासिल करे।

स्ट्रेट ऑफ होर्मुज पर भी राजनाथ ने रखी बात

राजनाथ सिंह ने मंगलवार को कहा कि स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में व्यवधान कोई दूर की घटना नहीं बल्कि यह एक कड़वी सच्चाई है जिसका भारत की सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता पर सीधा असर पड़ता है। उन्होंने जर्मनी की तीन दिवसीय यात्रा के पहले दिन रक्षा एवं सुरक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि आज दुनिया नए सुरक्षा खतरों का सामना कर रही है और तकनीकी परिवर्तन ने स्थिति को बेहद जटिल एवं परस्पर संबंधित बना दिया है। बदलते परिवेश के अनुकूल ढलने की तत्परता के साथ एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है। आपको बता दें कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की जर्मनी यात्रा ऐसे समय में हो रही है, जब पश्चिम एशिया में 50 दिनों से अधिक समय से संघर्ष जारी है और इसके वैश्विक परिणाम सामने आ रहे हैं।

कौशल और सामाजिक उद्यमिता से विकसित होगा भारत:गवर्नर

● राज्यपाल ने पांचवें 'समर्थ भारत कॉन्क्लेव' का किया शुभारंभ

भोपाल। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा कि कौशल आधारित सामाजिक उद्यमिता विकसित भारत का पथ है। इस दिशा में वैचारिक स्तर पर चिंतन की पहल समसामयिक और सराहनीय है। कॉन्क्लेव, शिक्षा और रोजगार के बीच की दूरी की समाप्ति के लिए समाधान का वैचारिक मंच बने। उन्होंने कहा कि कौशल और सामाजिक उद्यमिता से विकसित भारत निर्माण के चिंतन में सामाजिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों जैसे स्वच्छता, शिक्षा, जल संरक्षण, लैंगिक समानता, प्राथमिक स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के समाधान खोजने का प्रयास किया जाना चाहिए। राज्यपाल श्री पटेल बुधवार को कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में पांचवें समर्थ भारत कॉन्क्लेव के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कॉन्क्लेव का आयोजन विकसित भारत के निर्माण में कौशल विकास और सामाजिक उद्यमिता विषय पर किया गया है। राज्यपाल श्री पटेल ने कॉन्क्लेव से पहले कौशल रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

युवाओं को समावेशी विकास का सहभागी बनाएं

राज्यपाल पटेल ने कहा कि हमारी लगभग 65 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। युवाओं को जमीनी स्तर से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। उन्हें पारंपरिक सोच से आगे बढ़कर, नई और रचनात्मक पहल के द्वारा आर्थिक परिवर्तन का माध्यम तथा समावेशी विकास का सहभागी बनाना होगा। डिजिटल एवं तकनीकी कौशल, नीतिगत सहयोग और सतत विकास के संतुलित मॉडल और आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक समरसता के ठोस उपायों से परिचय करना होगा।

बंगाल की पहचान काबा नहीं मां काली से है

योगी बोले-ममता दीदी को रामनाम से चिढ़ है

● कोलकाता के मेयर कहते हैं-यहां तो उर्दू चलेगी

लखनऊ (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में सीएम योगी ने कहा- जब भारत आजाद हुआ तो तब पूरा देश रोजगार के लिए बंगाल आता था। उसके बाद पहले कांग्रेस ने लूटा, फिर कम्युनिस्टों ने नोचा, अब 15 साल से टीएमसी कंगाल कर रही है। सीएम ने कहा- बुआ-भतीजा मिलकर बंगाल के अस्तित्व को खत्म करना चाहते हैं। कोलकाता का मेयर कहता है यहां उर्दू चलेगी। मैं कहता हूं कोई माई का लाल बंगाली अस्मिता के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। बंगाल की पहचान काबा से नहीं मां काली बाड़ी से है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को पश्चिम बंगाल की जोरासांको और चकदहा विधानसभा सीट पर चुनावी रैली की। भाजपा प्रत्याशियों को जिताने की अपील करते हुए सीएम योगी ने ममता सरकार पर जमकर निशाना साधा। रैली में एक बच्चा पोस्टर लेकर पहुंचा था जिस पर लिखा था- योगी जी बुलडोजर लाओ, हम तुम्हारे साथ हैं। सीएम योगी ने कहा- बंगाल में धड़ल्ले से गोहत्या होती है।

बुलडोजर माफिया-गुंडों की हड्डियों का हाईवे बना देता

सीएम योगी ने कहा- यूपी में माफिया और गुंडा सिर उठाता है तो बुलडोजर उनकी हड्डी-पसली को हाईवे बनाने में उपयोग करता है। कांग्रेस और सपा के समय जो गुंडों ने सरकारी संपत्ति पर कब्जा किए उसमें गरीब की भूमि गरीब को दी। सरकार की जमीन सरकार के पास आई और उनकी खुद की कमाई से अर्जित जमीन पर गरीबों के लिए घर बन रहे हैं। काशी, प्रयागराज में पूरी दुनिया आ रही है। ये तभी होता है जब भाजपा की डबल इंजन की सरकार होती है। हमने अयोध्या-काशी को संवारा है और बंगाल में गुरुदेव रविंद्र की पैतृक संपति पर टीएमसी का कब्जा है।

रिजल्ट आते ही बंगाल फिर सोनार बांग्ला बनेगा

सीएम योगी ने कहा- यूपी में कब्जा नहीं होता। वहां गुंडा जानता है कि अगर कब्जा किया तो सरकार उनकी 7 पुश्तों की जमीन निकालकर गरीबों के लिए घर बनवा देगी। मैं जानता हूं 4 मई को जब रिजल्ट आएगा तो बंगाल सोनार बांग्ला बनके अपनी अस्मिता को पहचानेगा। उन्होंने कहा- हमें बंगाल की अस्मिता को बचाना। अभी जो कठमुल्लापन को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसे हर हाल में रोकना होगा। इसके लिए भारत के लोकतंत्र ने जो ताकत दी है उसका इस्तेमाल कीजिए। सीएम योगी ने नादिया जिले की चकदहा सीट पर रैली की। वहां उन्होंने कहा- में बंगाल में आज उपद्रव का माहौल है। ममता दीदी दुर्गा पूजा नहीं होने देती। उत्सव से पहले कर्फ्यू लग जाता है। जिस बंगाल ने भारत को राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत दिया। रविंद्रनाथ ठाकुर की पैतृक संपति पर टीएमसी के गुंडों ने कब्जा कर लिया। वहां ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी का फोटो लगा दिया। न बेटी सुरक्षित है, न बहन सुरक्षित है, न किसान-व्यापारी सुरक्षित है। इससे भी बुरा हाल 2017 से पहले यूपी का था। फिर यूपी की जनता ने भाजपा की डबल इंजन की सरकार बनाने में योगदान दिया। उसके बाद यूपी में 9 साल से कोई दंगा नहीं हुआ। नो कर्फ्यू नो दंगा, यूपी में है सब चंगा।